पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.05.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आगामी आर्य कार्यकर्ता बैठक

शनिवार, 9 मई प्रातः 11 बजे
आर्य समाज,
गुड़मण्डी,दिल्ली में
व सायं 5.00 बजे,
आर्य समाज,
सन्देश विहार, दिल्ली
कृपया अपने निकट की
बैठक में अवश्य पंहुचे

वर्ष-31 अंक-23 ज्येष्ठ-2072 दयानन्दाब्द 191 01 मई से 15 मई 2015 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.05.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

यमुना नगर में आर्य महासम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

देश में जहां पर हिन्दु कम हुआ वहां पर अलगाववाद पनपा है -डा.अनिल आर्य

दिनांक 24,25,26 अप्रैल 2015 को हरियाणा के यमुना नगर के अमन पैलेस, रेलवे वर्कशाप रोड में स्वामी सच्चिदानन्द जी के सान्निध्य में आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि इतिहास साक्षी है कि देश के जिस हिस्सें में हिन्दु अल्पसंख्यक हुआ है वहां पर आंतकवाद व अलगाववाद पनपा है। उपरोक्त चित्र में—डा. अनिल आर्य का शाल द्वारा अभिनन्दन करते डा. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), चौ.लाजपतराय आर्य (करनाल), स्वामी सच्चिदानन्द जी, रामकुमार सिंह, रणसिंह राणा आदि। द्वितीय चित्र—श्री गोपाल शर्मा का का सपत्निक स्वागत करते डा. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह, मोहित आर्य (प्रधान,आर्य समाज,यमुना नगर)।

वेद प्रचार जनचेतना यात्रा का दिल्ली में 33 स्थानों पर हुआ शानदार स्वागत

दिनांक 16,17 अप्रैल 2015 को हरिद्वार से दिल्ली आगमन पर जन चेतना यात्रा का भव्य व यादगार 33 स्थानों पर स्वागत किया गया। चित्र में—आर्य समाज,दिलशाद गार्डन में दिल्ली सरकार के मन्त्री श्री गोपाल राय व डा. अनिल आर्य, देवेन्द्रपाल वर्मा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, रामकुमार सिंह, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, प्रधान श्री जवाहर भाटिया आदि। संचालन श्री सुरेश गुखीजा ने किया। द्वितीय चित्र—आर्य समाज, लाजपत नगर में प्रधान श्री राजेश मेहन्दीरता, श्री सुरेन्द्र शास्त्री (मन्त्री), चतरसिंह नागर, अनिल हाण्डा, प्रकाशवीर शास्त्री, रामकुमार सिंह आदि। यात्रा 23 अप्रैल को गुरूकुल होंशगाबाद में सम्पन्न हुई।

आर्य समाज, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 26 मई 2015, आर्य समाज, सैक्टर—7, रोहिणी का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में—डा. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए। मंच पर—आर्य तपस्वी सुखदेव जी, ब्र. भीम, आचार्य सत्यवीर शर्मा, आचार्य अखिलेश्वर जी, पं.दिनेश पथिक (अमृतसर) व द्वितीय चित्र—श्री ओमप्रकाश गुप्ता का सपत्निक स्वागत करते हुए डा. अनिल आर्य, प्रधान शिवकुमार गुप्ता, उर्मिला आर्या, अमिता सपरा आदि। कुशल संचालन मन्त्री श्री राजीव आर्य ने किया। श्री कृष्णचन्द पाहुजा, सोहनलाल मुखी, रणसिंह राणा, सुदेश डागरा, विजय आर्य आदि भी उपस्थित थे।

आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

आर्य समाज,रमेश नगर,ब्लाक—9, दिल्ली

उद्घाटन समारोह

सोमवार, 18 मई 2015,प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक

भव्य समापन समारोह

रविवार, 24 मई 2015, सायं 5 से 7.30 बजे तक

नोटः सभी बालिकायें रविवार, 17 मई को सायं 5 बजे पंहुच जायें

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल,सैक्टर—44, नोएडा

भव्य उद्घाटन समारोह

शनिवार, 6 जून 2015, सायं 5 से 7.00 बजे तक

भव्य समापन समारोह

रविवार, 14 जून 2015,सायं 5 से 7.30 बजे तक

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

सच्चे आध्यात्मिक श्रम से अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति

– मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर ने मनुष्य को ऐसा प्राणी बनाया है जिसमें शक्ति वा ऊर्जा की प्राप्ति के लिए इसे भोजन की आवश्यकता पड़ती है। यदि इसे प्रातः व सायं दो समय कुछ अन्न अर्थात् रोटी, सब्जी, दाल, कुछ दुग्ध व फल आदि मिल जाएँ तो इसका जीवन निर्वाह हो जाता है। भोजन के बाद वस्त्रों की आवश्यकता भी होती है। भोजन व वस्त्रों को प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही निवास के लिए अपना व किराये का घर भी चाहिये होता है। अब इन सबके लिए धन अर्जित करने के लिए उसे श्रम करना पड़ता है। यदि नहीं करेगा तो धन प्राप्त नहीं होगा जिसका परिणाम होगा जीवन निर्वाह में बाधा। अब वह क्या कार्य करे कि जिससे आवश्यकता के अनुसार धन प्राप्त हो? इसके लिए अनेक कार्य हैं जिन्हें वह कर सकता है। इसके लिए शिक्षा व किसी कार्य के अनुभव की आवश्यकता होती है। माता–पिता इसी कारण अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा देते हैं जिससे वह कोई अच्छा सम्मानित कार्य कर अपनी व अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

आजकल बच्चे कक्षा 12 तक पढ़–लिख कर आगे डाक्टर, इंजीनियर, मैनेजमेन्ट आदि के कोर्स करते हैं। इसमें उत्तीर्ण होने पर अच्छी नौकरी मिल जाती है जिससे जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होने के साथ मनुष्य समाज में सम्मानित जीवन व्यतीत करता है। जो लोग इन महगें कोर्सों व उपाधियों को प्राप्त नहीं कर पाते वह इण्टर, स्नातक व स्नात्कोत्तर उपाधियां प्राप्त कर व कुछ अन्य प्रशिक्षण आदि प्राप्त कर सरकारी, निजी कार्य या प्राइवेट नौकरियां करते हैं। कुछ अशिक्षित, अल्प शिक्षित और शिक्षित भी कृषि या श्रमिक का कार्य भी करते हैं और इनमें भी कुछ कार्यों को सीख कर अच्छा धन उपार्जित करते हैं। हमने देखा है कि कई हलवाई, प्रापर्टी डिलर, दूध के व्यापारी, खिलाड़ी, कलाकार व राजनीति से जुड़े व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न हैं। इतने सम्पन्न हैं कि ऊंची शैक्षिक योग्यता रखने वाले व बड़े पदों पर कार्य करने वाले व्यक्ति भी नहीं हैं। हमारा यह लिखने का तात्पर्य केवल यह बताना है कि नाना प्रकार के कार्यों को करके लोग धन कमाते हैं और फिर उसके अनुसार सुविधा सम्पन्न या साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। जो व्यक्ति जो कार्य कर रहा है उसे उसका उचित पारिश्रमिक या वेतन मिलना चाहिये। कहीं कुछ अधिक मिलता है और कहीं बहुत कम, अर्थात श्रम का शोषण हुआ करता है। इस शोषण को समाप्त करने और श्रम के दिन, समय व अवकाश आदि की सुविधा दिलाने के लिए श्रम संगठन बने हुए हैं। इन संगठनों ने मजदूर व श्रमिकों की उनकी अनेक न्यायोचित मांगे सरकार व उद्योगपतियों आदि से स्वीकार करवाई हैं जिनसे मजदूरों व अन्य सेवारत मनुष्यों का जीवन सुखद बना है। इन सभी प्रकार के व्यवसाय जो मनुष्य करते हैं, उनमें देखा जाता है कि मनुष्य अपनी योग्यता व श्रमशक्ति से कार्य करता है जिसका उसे धन के रूप में कमपैन्शेसन, पारिश्रमिक, मजदूरी या वेतन मिलता है। मनुष्य जो श्रम के द्वारा कार्य करते हैं वह दूसरे मनुष्यों के काम आने वाली वस्तुओं व सुविधाओं आदि से जुड़ा होता है। यहां हम इन सभी कार्यों से भिन्न आध्यात्म से जुड़े श्रम की भी कुछ चर्चा कर रहे हैं।

अध्यात्म में इस प्रश्न पर विचार किया गया है कि यह संसार किसके द्वारा, किसके लिए व किस वस्तु से बना है। इसके बाद मनुष्य विषयक कुछ अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों, कि मैं कौन हूं, मेरा उद्देश्य क्या है और उस उद्देश्य की प्राप्ति के साधन और साध्य क्या हैं? इन प्रश्नों पर विचार किया गया है और इनके उत्तर ढूढें गये हैं। इन प्रश्नों और इनके उत्तरों से आज का सारा संसार अनभिज्ञ है, यह आश्चर्य एवं दुःख की स्थिति है। देश विदेश के सभी मनुष्यों को इन प्रश्नों से कोई भी सरोकार प्रतीत नहीं होता। हमारा अध्ययन यह बताता है कि यह सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से जीवन के महत्वपूण प्रश्न हैं, इन पर प्रत्येक बुद्धिमान कहे जाने वाले मनुष्य को अवश्य ही विचार करना चाहिये। या तो वह स्वयं इनके उत्तर बतायें अथवा दर्शनों आदि ग्रन्थों में तर्क, युक्ति व ऊहापोह से जो उत्तर खोजें गये हैं, उनका खण्डन करे या यथावत् स्वीकार करे। यदि वह ऐसा नहीं करता तो फिर यही माना जायेगा कि वह व्यक्ति मनुष्य = मननशील नहीं है। अतः ऐसे मनुष्य, मनुष्य न होकर पशु समान है जिसका उद्देश्य पशुओं की तरह केवल इन्द्रिय सुख के कार्य करना मात्र है। इन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर हम दे रहे हैं। संसार में तीन पदार्थों ईश्वर, जीव व प्रकृति का अस्तित्व है जो नित्य, अनादि, अनुत्पन्न, सनातन, अमर, अविनाशी गुणों वाले हैं। ईश्वर ने प्रकृति को उपादान कारण के रूप में प्रयोग कर इस संसार को बनाया है। ईश्वर व जीव अर्थात् जीवात्मायें चेतन तत्व हैं। ईश्वर सत्य–चित्त–आनन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वातिसूक्ष्म पदार्थ है। जीवात्मा एक चेतन तत्व, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, अजर, अमर आदि गुणों वाला है जो अपने कर्मानुसार बार बार जन्म लेता है व मृत्यु को प्राप्त होता है। मृत्यु के बाद पुनः इसका जन्म होता है जिसे पुनर्जन्म के नाम से जानते हैं। मैं कौन हूं, इस प्रश्न का उत्तर है कि मैं एक जीवात्मा हूं जिसका स्वरूप पूर्व पंक्ति में प्रस्तुत किया गया है। अब मेरा व हमारा उद्देश्य क्या है? इसका उत्तर देते हैं। उद्देश्य जीवात्मा का उन्नति करना है। उन्नति अच्छे कर्मों को करके होती है। जैसे विद्यार्थी को अपने विषय की पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त कर परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है। इसी प्रकार जीवात्मा को अच्छे कर्म करके जिनमें सेवा, परोपकार, यज्ञ, माता–पिता–आचार्य व अतिथियों की सेवा आदि कार्यों सहित नियत समय में ईश्वर को जानकर उसके सत्यस्वरूप में अवस्थित हो उसकी स्तुति व प्रार्थना को करना होता है। इन कार्यों को करके जीवात्मा की उन्नति होती है। मनुष्य की वह अध्यात्मिक उन्नति किस प्रकार की है? वह ऐसी है कि इससे समस्त दुःखों की निवृत्ति स्वार्जित ज्ञान व ईश्वर द्वारा होती है। इससे मनुष्य बार बार के जन्म व मृत्यु के चक्र से छूटकर लम्बी अवधि के लिए मुक्त होकर ईश्वर के सान्निध्य में रहकर सुख भोगता है।

यदि मजदूरी व श्रम की तरह अध्यात्मिक श्रम की बात करें तो अध्यात्मिक श्रम ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना सहित धार्मिक लाभों सुख, शान्ति, जन्मोन्नति व मोक्ष के लिए किए जाने वाले कार्य हैं। जो लाभ एक मजदूर व व्यवसायी को भोजन, आवास, वाहन, पूंजी, यात्रा आदि से प्राप्त होता हैए वह व उससे अधिक सुख व आनन्द आध्यात्मिक श्रम अर्थात् ईश्वरोपासना, सेवा व परोपकार आदि कार्यों से आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्यों को मिलता है। यह बात केवल काल्पनिक नहीं है अपितु इसका विस्तृत वर्णन एवं क्रियात्मक ज्ञान हमारे वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। जो व्यक्ति इस आध्यात्मिक श्रम व साधना को करता है उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति सासांरिक जीवन जीने वाले गृहस्थी व सज्जन पुरूषों से प्राप्त साधनों व धन आदि से हो जाती है। हम स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि उन्होंने 22 वर्ष की अवस्था में अपने पिता का सुख–सुविधाओं से सम्पन्न घर छोड़ा था। उसके बाद वह मृत्यु पर्यन्त देशाटन करते हुए योग्य शिक्षकों, गुरूओं, आचार्यों, योगियों व यतियों आदि सहित सद्ग्रन्थों की खोज करते रहे और उनसे जो ज्ञान आदि पदार्थ मिलते थे उसका अभ्यास व अध्ययन कर उन्हें स्मरण कर लेते थे। उनकी भौतिक पूंजी मात्र एक कौपीन या लंगोट थी। त्याग भावना इस कदर थी कि उन्होंने अपने लिए दूसरा लंगोट तक नहीं लिया था। भोजन कभी मांगा नहीं, यदि किसी ने पूछा और स्वेच्छा से प्रदान किया, तो कर लेते थे। उनका स्वास्थ्य एक आदर्श मनुष्य के जैसा था और बल भी सामान्य व बलवानों से अधिक ही था जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्हें भोजन भी मिलता ही था। जिस प्रकार से धनाभाव होने पर हम निराश हो जाते हैं, ऐसा महर्षि दयानन्द के जीवन में देखने को नहीं मिलता। वह सदैव सन्तुष्ट रहते थे। गुरू की आज्ञा से जब वह सन् 1863 में कार्य क्षेत्र में उतरे तो उसके बाद उनके इतने सहायक बन गये कि उनकी सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे। सभी सांसारिक लोग जो उनके विचारों से प्रभावित होते थे, जिसमें कई स्वतन्त्र राज्यों के राजा–महाराजा भी थे, वह उनका आतिथ्य कर प्रसन्न होते थे और उनके द्वारा सम्पादित धर्म प्रचार के कार्यों में सर्वात्मा सहयोग भी करते थे। स्वामीजी ने अनेक लोगों को लेखक, पाचक, सेवा के साथ पाठशाला के संस्कृत शिक्षक, परोपकारिणी प्रेस के प्रबन्धक व अन्य कर्मचारियों के रूप में व्यवसाय भी दिया हुआ था और अपने सहायक कर्मचारियों को उचित व सन्तोषजनक वेतन देते थे और सबका सम्मान भी करते थे। इनके जीवन से शिक्षा लेकर सभी धर्म सम्बन्धी कार्यों को जिसमें योग प्रचार भी सम्मिलित कर सकते हैं, आध्यात्मिक श्रम में सम्मिलित कार्य हैं और इससे जीवन को सुखी व निरोग बनाया जा सकता है।

मई दिवस को ध्यान में रखते हुए इस लेख में हमने सांसारिक श्रम व आध्यात्मिक श्रम की चर्चा की है। हम अनुभव करते हैं कि आज के आधुनिक युग व परिस्थितियों में इन दोनों प्रकार की जीवन शैलियों का समन्वय ही सच्चा आध्यात्मिक–श्रम से युक्त जीवन हो सकता है। हम सांसारिक शिक्षा से ज्ञान, योग्यता व अनुभव प्राप्त करें और व्यवसाय के लिए किसी अच्छे कार्य व सेवा को चुने। उससे धन उपार्जन करें और इसके साथ अपने जीवन में यथासमय ईश्वरोपासना, यज्ञ–अग्निहोत्र, सेवा, परोपकार, माता–पिता–आचार्य–अतिथि सेवा आदि के कार्य भी करते रहें जिससे सभी प्रकार के आध्यात्मिक लाभ भी हमें प्राप्त हों। आज की परिस्थितियों में यही सन्तुलित जीवन कहा जा सकता है। धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में देश में अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियों भी फैली हुई हैं जिससे बचने के लिए विवेक की आवश्यकता है। यह विवेक महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों सहित अन्य सद्ग्रन्थों के अध्ययन से प्राप्त होगा। अध्यात्म वा सद्धर्म की जीवन में उपेक्षा बहुत हानिकारक व महगीं सिद्ध होगी। इस पर सभी को व्यापक दृष्टि से विचार कर सही मार्ग का चयन करना और उसी पर चलना जीवन का ध्येय होना चाहिये।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ ओ३म् ॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला रे

युवा शक्ति को चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान बनाने का अभियान

ओ३म् बलमुपास्व

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर

शनिवार 6 जून से रविवार 14 जून 2015 तक

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर 44, नोएडा

सम्पर्क : श्री संतोष शास्त्री - 9868754140, श्री प्रवीन आर्य - 9911404423

2. दिल्ली आर्य कन्या शिविर

रविवार 17 मई से 24 मई 2015 तक

स्थान : आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली

सम्पर्क : उर्मिला आर्या-9711161843, अनीता कुमार-9212645522

3. हापुड़ आर्य कन्या शिविर

सोमवार 1 जून से 7 जून 2015 तक

स्थान : आर्य इन्टर कॉलेज, हापुड़, उ.प्र.

सम्पर्क: आनन्दप्रकाश आर्य- 09837086799, डा. विकास आर्य-9837791132

4. राजस्थान युवक निर्माण शिविर

रविवार 7 जून से 14 जून 2015 तक

स्थान : राठ इन्टरनेश्नल स्कूल, एन.एच-8, बहरोड़ (अलवर)

सम्पर्क : आचार्य रामकृष्ण शास्त्री-09887669603, 09461405709

5. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर

रविवार 31 मई से 7 जून 2015 तक

स्थान : राजकीय उच्च. विद्यालय, न.-3, एन.आई.टी. (फरीदाबाद)

सम्पर्क : श्री वीरेन्द्र योगाचार्य-9350615369, मनोज सूमन-9810064899

6. पलवल युवक निर्माण शिविर

सोमवार 8 जून से रविवार 14 जून 2015 तक

स्थान : न्यू डी.पी.एस. पब्लिक स्कूल, न्यू कॉलोनी, पलवल (हरियाणा)

सम्पर्क : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती-08053355496, 9416267482

7. कैथल युवक निर्माण शिविर

रविवार 31 मई से रविवार 7 जून 2015 तक

स्थान : स्वामी बलेश्वरानन्द आश्रम, बणी, पुण्डरी, कैथल

सम्पर्क : सूर्यदेव आर्य-09416715537, राजपाल बहादुर-

8. जीन्द युवक निर्माण शिविर

रविवार 17 मई से 24 मई 2015 तक

स्थान : महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, भटनागर कॉलोनी, जीन्द

सम्पर्क : श्रीकृष्ण दहिया-07357777172, योगेन्द्र शास्त्री-09416138045

9. झारखण्ड आर्य कन्या शिविर

सोमवार 25 मई से 31 मई 2015 तक

स्थान : आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारी बाग, झारखण्ड

सम्पर्क : कृष्णप्रसाद कोटिल्य-09430309525, पुष्पा शास्त्री-6546263706

10. उत्तराखण्ड योग-आयुर्वेदिक शिविर

शुक्रवार 22 मई से 29 मई 2015 तक

स्थान : गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पोड़ी गढ़वाल

सम्पर्क : ब्र. विश्वपाल जयन्त-09837162511

11. जम्मू युवक निर्माण शिविर

रविवार 21 जून से 28 जून 2015 तक

स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू

सम्पर्क : श्री सुभाष बब्बर-09419301915

12. उड़ीसा युवक निर्माण शिविर

बुधवार 15 अप्रैल से 21 अप्रैल 2015 तक

स्थान : वेद व्यास संस्कृत महाविद्यालय, राऊरकेला, उड़ीसा

सम्पर्क : आचार्य धनेश्वर बेहरा-09337117429

13. जयपुर युवक निर्माण शिविर

रविवार 14 जून से 21 जून 2015 तक

स्थान : अग्रसेन भवन, मालवीय नगर, जयपुर

सम्पर्क : श्री यशपाल यश-09414360248

14. करनाल युवक निर्माण शिविर

बुधवार 17 जून से 21 जून 2015 तक

स्थान : आर्य समाज, प्रेम नगर, करनाल

सम्पर्क : श्री स्वतन्त्र कुकरेजा-09813041360, अजय आर्य-09416128075

15. मध्य प्रदेश युवक निर्माण शिविर

मंगलवार 24 जून से 28 जून 2015 तक, स्थान : आर्य समाज, संचार नगर, इन्दौर

सम्पर्क : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार-09977967777, 09977987777

सभी शिविरों के 'समापन समारोह' पर दल बल सहित पहुँचे व तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें

निवेदक

डा. अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	रामकुमार सिंह	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9810117464	9312223472	9868064422	9013137070	9871581398

केन्द्रीय कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली - 110007, फोन-9868661680

Email: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

आर्य समाज दादरी व नोएडा, उत्तर प्रद्रेश का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 19 अप्रैल 2015,आर्य समाज, दादरी,गाजियाबाद में महात्मा हंसराज दिवस सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज सेवी डा.आनन्द आर्य व आचार्य प्रेमपाल शास्त्री का अभिनन्दन करते स्वामी शिवानन्द जी व डा.अनिल आर्य । द्वितीय चित्र–आर्य समाज, सैक्टर –33,नोएडा में डा.अनिल आर्य का स्वागत करते डा.जयेन्द्र आचार्य,कै.अशोक गुलाटी(मन्त्री) व श्रीमती गायत्री मीना(प्रधान) आदि।

राष्ट्रीय कवि प्रो. मनीषी हुए सेवा निवृत व श्री राममेहरसिंह पुनः प्रधान निर्वाचित

रविवार, 26 अप्रैल 2015,आर्य लेखक,साहित्यकार व राष्ट्रीय कवि प्रो.सारस्वतमोहन मनीषी दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवा निवृत हो गये,इस उपलक्ष में गुरूकुल खेड़ाखुर्द,दिल्ली में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। चित्र में–प्रो.सारस्वतमोहन मनीषी का शाल व स्मृति चिन्ह द्वारा अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,साथ में श्री रवि चड्डा,आचार्य सुधांशु,डा.धर्मवीर आर्य,लक्ष्मणसिंह आर्य, जयसिंह आर्य आदि। द्वितीय चित्र–रविवार, 26 अप्रैल 2015 को आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–1, दिल्ली के चुनाव में श्री राममेहरसिंह–प्रधान,श्री जीवनलाल आर्य–मन्त्री व श्री ओमप्रकाश गुप्ता– कोषाध्यक्ष चुने गये। साथ में डा.अनिल आर्य, श्री आनन्द कुमार आर्य व श्री सत्यपाल गांधी।

गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ में यात्रा का भव्य स्वागत व मन्त्री श्री पी. के. मितल का अभिनन्दन

दिनांक 17 अप्रैल 2015,स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपोस्थली गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ,फरीदाबाद में जनचेतना यात्रा के पंहुचने पर भव्य स्वागत किया गया। चित्र में डा. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए, साथ में आचार्य ऋषिपाल जी, श्री सत्यभूषण आर्य (एडवोकेट), श्री पी. के.मितल (मन्त्री, गुरूकुल), प्रो. श्योताजसिंह व श्री देवेन्द्रपाल वर्मा। द्वितीय चित्र–आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के प्रधान चुने जाने पर श्री पी. के. मितल का पगड़ी पहना कर अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी व डा.अनिल आर्य आदि।

दुर्गापुरी में योग शिविर सम्पन्न व गुरूकुल चोटीपुरा में आचार्या उर्मिला व अमिता का स्वागत

पंतजलि द्वारा दुर्गापुरी, दिल्ली में योग शिविर लगाया गया, इस अवसर पर आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया, चित्र में पुस्तक का विमोचन करते श्री महेन्द्र भाई, श्री रामपाल पंचाल, रामकुमार सिंह आदि। द्वितीय चित्र–शुक्रवार, 30 अप्रैल 2015 को गुरूकुल चोटीपुरा, अमरोहा,उ.प्र. में परिषद् की टीम निरीक्षण करने पंहुची, गुरूकुल में 750 कन्यायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, सुन्दर 1500 लोगो के लिये सभागार, आधुनिक स्वाचलित भोजनालय, यज्ञशाला,गऊशाला सभी दर्शनीय व प्रशंसनीय है। चित्र में– आचार्या उर्मिला व अमिता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, वेदप्रकाश आर्य, कै.अशोक गुलाटी, अनिल हाण्डा, महेन्द्र भाई, आनन्दप्रकाश आर्य, रामकुमार सिंह।

व्यायाम शिक्षक की आवश्यकता

आर्य बन्धु स्पोटर्स एकेडमी को प्रशिक्षित व्यायाम शिक्षक की आवश्यकता है जो प्रतियोगिताओं की तैयारी भी करवा सके,वेतन योग्यतानुसार–सम्पर्क करें–ओमेन्द्र आर्यः
09212405141,9899845141.

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस 15 मई को

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी का 12 वां स्मृति दिवस शुक्रवार, 15 मई 2015 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक गुरूकुल चोटीपुरा,रजबपुर,अमरोहा (गजरोला से 15 किलोमीटर आगे एन.एच.–24 पर) मनाया जायेगा । दिल्ली से ए.सी. बसों की व्यवस्था है।
सम्पर्क करें–महेन्द्र भाई–**9013137070.**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970